मेरे शब्द

काव्य संग्रह

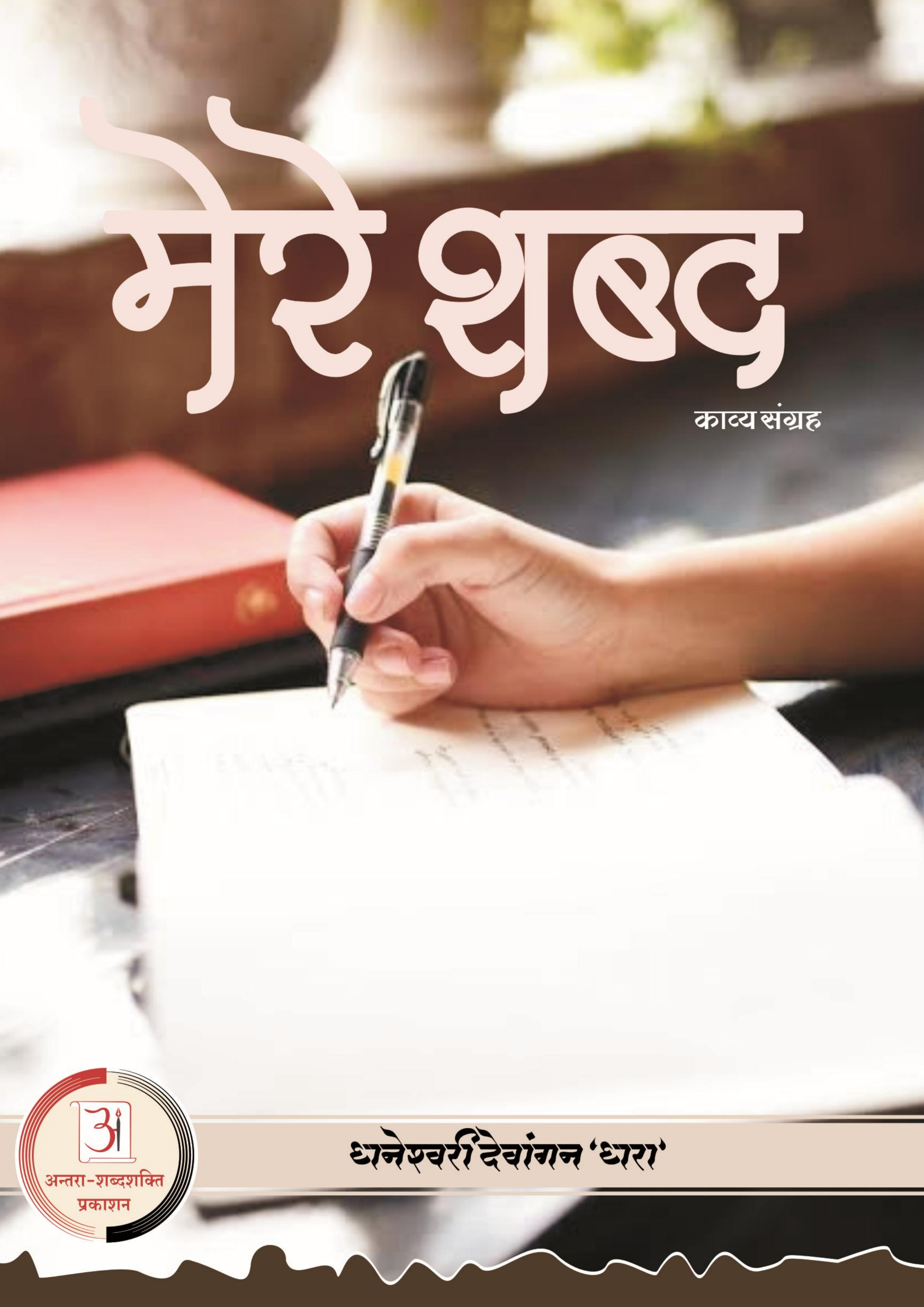

धानेश्वरी देवांगन 'धारा'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मेरे शब्द

काव्य संग्रह

धनेश्वरी देवाँगन 'धरा'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-054-4"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ९४२४७६५२५९

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१९, **धनेश्वरी देवाँगन 'धरा'**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

MERE SHABD BY DHANESHWARI DEWANGAN

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

'मेरे शब्द' कुछ कल्पना... कुछ हकीकत... जिंदगी के अनमोल रंग है... जो कलम के माध्यम से इस पुस्तक में अलग-अलग विधा के माध्यम से चित्रित हुए हैं।

वास्तव में हर इंसान के अंदर विचारों का असीमित संसार छुपा हुआ है। कुछ दबा के रह जाते हैं तो कुछ जग-जाहिर कर जाते हैं। मैंने अपने विचारों को 'मेरे शब्द' पुस्तक के माध्यम से अलग-अलग विधा में पिरोकर कुछ कहने की कोशिश की है। आशा है कि पाठक भी मेरी विचारों को महसूस करेंगे।

मैंने गहन चिंतन कर अपने हृदय से जीवन के हर रंगों को छूते हुए इस पुस्तक 'मेरे शब्द' में अलग-अलग विधाओं में उकेरा है, जिसे पढ़कर मुझे पूरा विश्वास है कि आप सब भी आनंदित होंगे।

'मेरे शब्द' पढ़ते हुए आप जीवन की विविधा को महसूस करें। बस मेरी यही कामना है। अपनी अनमोल राय से मुझे जरूर अवगत कराइयेगा।

धनेश्वरी देवाँगन 'धरा'

अनुक्रमणिका

1.	मेरे शब्द	5
2.	अँखियों में ख़्वाब है	6
3.	ओ चिरैया री	7
4.	जिंदगी---!	8
5.	कौन अपना कौन पराया?	9
6.	संस्कार	10
7.	संकल्प करती हूँ	11
8.	मन आशा के सीप पले	12
9.	कुकुरमुत्ता	13
10.	पतंग मैं, तू है डोर सजना	14
11.	मुकद्दर	15
12.	हसीं सा दर्द	16
13.	आँधी	17
14.	हम-तुम	18
15.	तुम बिन,--!	19
16.	हर रुप में	20
17.	जद्दोजहद	21
18.	अश्क के अफसाने	22
19.	मैं मीरा तुम मेरे श्याम	23
20.	सोचे सखा कौन मेरा?	24
21.	दिल का क्या कसूर	25
22.	मैं मजदूर हूँ	26
23.	तुम्हारे लिए	27
24.	मीत बिन सब सून	28
25.	प्रेम अंतर्मन की मधुर आवाज है	29
26.	कैसा हाल है मेरा?	30
27.	तराना	31
28.	पलकों में सपने सँजोए	32

मेरे शब्द!

मेरे शब्द
मेरी कविता,
मेरी कलम,
मेरी लेखनी
मेरी गीत-गजल
मेरी जीवन की
अनुभूति बन कर
उभरते हैं,
जिंदगी के कैनवास पर
रंग-बिरंगी तस्वीर
उकेरती है मेरी
मेरी कलम
सुखद अनुभूति बन
मुझे जीने मकसद
सीखाती, संबल देती
मेरी लेखनी
मेरी प्यारी सखी
जो हरदम
मेरे साथ रहती
बन कर
मेरी प्यारी अनुभूति
मेरी कलम!

अँखियों में ख़्वाब है

अँखियों में ख़्वाब है, ख़्वाबों में है हसीं-सा डगर।
मंजिल की परवाह किसे, है प्यारा-सा हमसफर।

दिलकस वादियाँ हैं, दिल में कसक-सी होती है,
तेरा हाथ मेरे हाथ में, कितना सुहाना है मंजर।

जी करता है यूँ ही खोयी-सी रहूँ ख़्यालों में सदा,
काश, इस सुरमई रात की, कभी न होती सहर?

कदम-कदम साथ चलके, ये मुकाम पाया हमनें,
हमकदम मेरे, किसी मोड़ पर न आये कोई कहर?

साँसों की डोर से बँधे रहे, हरदम जुस्तजू हमारी,
हमदम मेरे, चलती रहे हरदम, प्रीत की ये लहर।

साथ पटरी-सी चलते रहेंगे हमेशा, निःसंकोच हम,
और गुजरता जायेगा खुशी-खुशी जिंदगी का सफर।

बस रब से सिर्फ एक गुजारिश करना मेरे अजीज,
तेरा मेरा प्यार रहे अमर लग जाए ना कोई नजर?

ओ चिरैया री

चिरैया री, चिरैया री...ओ चिरैया री।
क्यों हुई तू गुमसुम री.. ओ गौरैया री?

उजड़ गया देखो कैसे घोंसला तेरा ?
सूखी डाल पे कैसे हो भला बसेरा ?
विरान क्यूँ है अब चमन.. धरती मैया री..,
चिरैया री....चिरैया री...।
क्यों हुई तू ...?

चीं-चीं करता पखेरू फूदके आँगन में,
स्वछन्द विचरे मस्ती से दूर गगन में ।
लगते सारे सपने ले लूँ बलैया री..,
चिरैया री......।
क्यों हुई तू......?

सूनी-सूनी हुई घर की मुंडेर आज ,
कोई लौटा दे वो मृदुल-मधुर आवाज ।
मिले अब आसरा कोई... छाँव छैंया री..
चिरैया री....।
क्यों हुई,...?

जिंदगी...!

ये जिंदगी यहाँ धूप-छाँव का फेरा है,
जी लें कुछ वक्त, चंद दिनों का बसेरा है।
पिंजरे का पंछी एक दिन उड़ जायेगा,
क्या ले के जाये न कुछ तेरा न मेरा है।

कभी दुःख की शाम, कभी सुख का सवेरा है,
पल-प्रतिपल यहाँ तो खुशी गम का डेरा है।
इक मंच है जिंदगी कुछ दिन का ही खेला,
मन ने फिर क्यूँ हम सबको अहम् में घेरा है।

कभी खुशियाँ यहाँ, कभी गम का अँधेरा है,
वो जो ऊपर बैठा है सुन्दर चितेरा है।
हमें मिला इक हसीन उपहार है जिंदगी,
खुदा ने इस जमीं पे प्यार से उकेरा है।

कौन अपना कौन पराया?

यहाँ कौन है अपना.. कौन.. पराया..
मन बेचारा... कहाँ.. समझ पाये..
कुछ पराये... दे जाते हैं...
अपनेपन का... अहसास...
दे जाते हैं... अपनत्व.., स्नेह-प्रेम से....
समझते... भावनाऐं...मर्म मन के
मिला लेते हैं... दिल ..से दिल..
और कुछ अपने....
लगते पराये से....
अपनापन का मुखौटा...
लगा कर...प्रेम...जताने..
का ढ़ोंग रचते हैं ...
वक्त ने हमें..बताया...
यहाँ... कौन है... अपना...
कौन...पराया
वक्त ने... बहुत कुछ... दिखाया...
पराये में अपनापन...
और.. अपनों में परायापन...
परन्तु... ऐसा..
विरोधाभास ....आखिर.. क्यूँ.....?

संस्कार

नित प्रातः माता-पिता के शीष नवाये, संस्कार ऐसा हो,
बड़े-बुजुर्गों का सदा सम्मान करें, सदाचार ऐसा हो।

माता की दूध का, पिता के पसीने का मोल जो समझे,
पूत वो, सपूत वो, कर्तव्यनिष्ठ हो, शिष्टाचार ऐसा हो।

प्रेम-स्नेह, प्रीत-रीत, प्यार-दुलार, मान-मर्यादा की गंगा बहे,
विश्वास की डोर से बंधे रहें हरदम, परिवार ऐसा हो।

बरगद के छाँव जैसे बुजुर्गों का आश्रय हो हाथ सिर पर,
आँगन की तुलसी जैसे पवित्र मन हो, नवाचार ऐसा हो

दीपोत्सव की जगमग, होली के रंग, ईद की सेवँई हो,
दीप से दीप मिले, मन से मिले मन, त्यौहार ऐसा हो।

रंगोली से सजा अंगना हो, सजे फूल दीप पूजा की थाल,
मंगल आरती, मंत्रोच्चार से गूँजे, सुन्दर घर-द्वार ऐसा हो।

आपस में भाई चारा रहे कायम, चाहे हो हिन्दु-मुस्लिम,
चाहे सिख-इसाई, सपना है सजीला, 'धरा' संसार ऐसा हो।

संकल्प करती हूँ

ईर्ष्या विद्वेष दूर रहे मेरे जीवन से,
संकल्प करती हूँ आज निज मन से।

संघर्ष के पथ पर चलते रहें हम,
बाधाओं में भी मनोबल न हो कम।
मोहक महक बहे सदा हिय चमन से,
संकल्प करती हूँ आज निज मन से।

शुद्ध हो भावना न हो कोई विकार,
सत्यता ही धर्म हो, स्वस्थ हो विचार।
सदा सात्विक भाव रहे, कर्म वचन से
संकल्प करती हूँ आज निज मन से।

कर्म ही हो पूजा, कर्म ही हो साधना,
छल कपट से रहूँ परे, यही है प्रार्थना।
करती हूँ प्रभु प्रण, आज अंतर्मन से।
संकल्प करती हूँ, आज निज मन से।

ईर्ष्या विद्वेष दूर रहे मेरे जीवन से।
संकल्प करती हूँ आज निज मन से।

मन आशा के सीप पले

छाई निशा गहन अँधियारी,
टिम टिम कर ये दीप जले।
वर्षों राह निहारूँ तेरी,
मन आशा के सीप पले।।

जलके तेरे विरह आग में,
मैं कुंदन बन जाऊँगी।
मिलके तुमसे साजन मैं तो,
सारा दुःख बिसराऊँगी।।
जुगनू मेरा मन बहलाये,
बैरी रात ये कब ढले।
छाई निशा गहन अँधियारी,
टिम-टिम कर ये दीप जले।।

उड़ जाती हूँ दूर गगन में,
सपनों के पंख लगा के।
कब आओगे मेरे द्वारे,
बैठी हूँ थाल सजाके।।

मैं हूँ प्यासी जनम-जनम की,
नैनन नीर अब बह चले।
छाई निशा गहन अँधियारी,
टिम-टिम कर ये दीप जले।।

निशा अंधियारी-सी छायी,
टिम-टिम कर ये दीप जले ।
वर्षो निहारूँ राह तेरी,
मन आशा के सीप पले ।।

कुकुरमुत्ता

कुकुरमुत्ता... रहता बुत्ता...
सफेद, नर्म, मुलायम, कपसीला
नाजूक लचीला
उग आता...
कहीं भी....
शायद उसे दरकार नहीं
खाद पानी, सेवा-सुश्रुषा की
प्यार-मनुहार की...
मनुष्य ने उसे 'बेशरम' की
उपाधि दे दिया ....
वह बेचारा अपनी
वेदना किसे कहे....
सुन्दर पुष्पों से खिले
उपवन रूपी धनाड्य समाज में
स्वछंद रुप से उग आये ...
अवैध संतान के मानिंद....
जिसका न कोई ....
पहचान न वजूद...
कुकुरमुत्ता....
अल्पायु में ही दे जाता
इंसान को सीख अनेक...
स्वाभिमान का प्रतीक....
आत्मविश्चास, आत्मावलंबन...
से भरपूर,किसी से
न उपेक्षा, न अपेक्षा....
सरल सहज जीवन..
रहता बुत्ता.... कुकुरमुत्ता....!

पतंग मैं, तू है डोर सजना

पतंग मैं, तू है डोर सजना।
चंदा मै, तू है चकोर सजना ।

पाने को हरदम रहें आतूर ।
इकदूजे से रहते हम कितने दूर ।
इस छोर मैं, तू है उस छोर सजना,
पतंग मैं ......।
चंदा मैं ....।।

पूनम की रात में मिलन की आस ।
दूर होकर भी संग होने का आभास ।
रात की कभी न हो भोर सजना ,
पतंग मैं...........।
चंदा तू..........।।

चाँदनी हूँ मैं, उजले रैन की ।
पूरे हो जायें सपने ,तेरे नैन की ।
नम हैं अंखियों के कोर सजना,
पतंग मैं ....।
चंदा तू ....।।

कभी न आये अमावस की रात ।
यूँ ही रहे तेरा मेरा हरदम साथ ।
प्रीत की किरणों से रहें विभोर सजना ,
पतंग मैं ....।
चंदा.....।।

ए मुकद्दर

ए मुकद्दर, तेरी भी है क्या गजब खूबसूरत हस्ती,
किसी को साहिल तक छोड़ा, किसी की डूबा दी कश्ती।

कितना हसीं क्या खूब मीना बाजार सजाया तूने,
जिंदगी यहाँ कितनी कीमती मौत है कितनी सस्ती।

तू रहना पसंद करती क्यूँ कर महलों, हवेलियों में ही,
कभी बना के देख गरीब की झोपड़ियों में भी बस्ती।

कहीं दर्द, कहीं शोहरत, कहीं इबादत, कहीं नफरत,
देखी नही तेरे मानिन्द कहीं, ये कैसी तेरी मौकापरस्ती?

तेरी आरजू, जुस्तजू करना सच में बेमानी है, नादानी है,
ए मुकद्दर, तेरे खेल निराले, करता क्यूँ? मसखरी मस्ती।

देखा है, ख्वाहिशें हार जाती हैं नसीब के आगे अक्सर,
मेहनत से होड़ रहती है, पर कर जाते हो फिर नारास्ती।

दीवाने ढूँढा करते हैं हाथों की लकीरों, पेशानी पर,
'धरा' तोहमत लगाते हैं किस्मत उन्हें कभी भी नहीं बख्सती।

हसीं सा दर्द

हसीं सा दर्द है सीने में।
डोले कहीं दिल सफीने में।

अश्क बहते हैं सारी रात,
हसीं सा मजा है पीने में।

दर्दे-सुरुर हाल तो देखो,
मय-सा असर है पसीने में।

रातें तन्हा-तन्हा कटती हैं,
दिन गुजरता है महीने में।

तीर चला या कोई जादू,
दवा ढूँढू किस मदीने में?

रोशन है जवां दिल आज भी,
तेरे इश्क के नगीने में।

गर अहसास न हो मीठा-सा,
कहाँ आये मजा जीने में।

आँधी

चली.. एक आँधी.. ऐसी..
जो.. उड़ा ले.. गयी...
मेरी सारी... भावनाऐं...
मेरे.. वो.. सारे.. अहसास...
जिसे संजोया.. था...
बरसों से..,
पर बुझने नहीं..
दिया मैंने...
मन में जलता....
अपने... उम्मीद का... दीया..
जिसे जला... रखा है..
बरसों से...
हाँ... मैं कभी न..
बुझने दूँगी..
अपने.. आस के इस.. दीपक को..
जिसकी रोशनी से... आबाद है...
मेरी ...कायनात.. औ.. जिंदगी..
दुनिया के झंझावात...
मुश्किलों... के थपेड़े..
नहीं रोक सकेगी...
मेरे उम्मीद... के हौसले को...!

हम-तुम

दो दिलों का एहसास हैं हम-तुम
दूर होकर कितने पास हैं हम-तुम

कितनी बेरूख है जहां की रीत
एक उम्मीद, एक विश्वास हैं हम तुम

मैं कश्ती, तू दरिया चलें संग-संग
एक दूजे का सहारा, आस हैं हम-तुम

चाँदनी रात में टिमटिमाते हैं तारें
तारों के दिव्य प्रकाश हैं हम-तुम

ईश्वर से माँगी हुई फरियाद हैं
भीड़ में एकदम खास हैं हम-तुम

पतझड़ में भी सावन नजर आते
कितना अद्‌भुत आभास हैं हम-तुम

पानी मे लिखे गये अल्फाज हैं
मोहब्बत का असास हैं हम-तुम

असास = नींव

तुम बिन....!

हर लम्हा, हर क्षण,
हर पल, हर वक्त, हरदिन
कैसे बतायें कैसे कटे
ये जिंदगी तुम बिन
हर वक्त यादों में तुम
समाये रहते हो
दिल की दुनिया में
छाये रहते हो
कटे न रैन दिन
बरस लगते हैं
पल छिन
सुहावनी पुरवैया
मन को बहकाये
काली घटा डसे
बन नागिन
झोंका शीतल पवन का
याद तेरी ले आये
खो जाये मन कहीं
बन पंछी गगन में
ऐ पुरवाई अब की
ले के आ मेरे सजन
आस से तकती नयन
कैसे कटे तुम बिन
हर वक्त हर दिन।

हर रूप में

स्वर्ण, कनक, कंचन, हेम अनेक नाम में तुम हो ना।
हर रूप में देखो बसा, कितना अमोल है सोना।

दोनों ही पूरक इक दूजे के, सोना और नारी,
इक दूजे के बिन मोल नहीं, दोनों जग पे भारी।
दोनों से ही तो स्वर्ग-सा बने घर का हर कोना,
स्वर्ण कनक ....।
हर रूप में...........।।

चाहत नारी की सोने-सा मिले उसको संसार,
गहना बन पूर्ण करता नारी का सोलह श्रृंगार ।
जिसे पाना शुभ हो तो मानें उसे अशुभ है खोना,
स्वर्ण कनक..........।
हर रूप में............।।

चाहे वो गृहिणी बन के परिवार सोने -सा खरा,
प्रेम के धागे से बँधे रहे सब स्वार्थ न हो जरा।
घर- द्वार कंचन-सा दमकता रहे सुन्दर सलोना ,
स्वर्ण कनक.........।
हर रूप में...........।।

माँ की चाहत सदा, सोने जैसे निखरें संतान,
माता- पिता का मान बढ़े हरदम, रहता अरमान।
फर्ज जिसका संस्कार के स्वर्ण मोती से पिरोना,
स्वर्ण कनक...........।
हर रूप में ....।।

जद्दोजहद

जद्दोजहद की जहां में ख़्वाब सजाना आसान नहीं।
हर ख़्वाहिशों को मुकम्मल कर पाना आसान नहीं।

मतलबी दुनिया में मतलबी लोगों की नहीं है कमी,
मौकापरस्तों की बस्ती में घर बसाना आसान नहीं।

छाले जो मैंने हैं पाले उन जख्मों के दाग हैं गहरे,
जख्मों के वो दाग भी तो अब मिटाना आसान नहीं।

वो कशिश वो अदाएं उसकी शख्सियत का जादू ,
आलम है कि उसे अब ताउम्र भुलाना आसान नहीं।

कल थी जिंदंगी जहाँ पर वही आकर रुक सी गयी है,
इस मुक़ाम पर आकर अब वापस जाना आसान नहीं।

जमाने के जाने कितने दर्द छिपा रखे हैं सीने में,
बड़े बेदर्द हैं लोग अपने दर्द बताना आसान नहीं।

बाज नहीं आयेंगे वो अपनी दिलकश अदाओं से,
इश्क़ की गलियों से यूँ नजरें हटाना आसान नहीं।

अश्क़ के अफसाने

बेहद ही दिलकश हैं अश्क़ के अफसाने।
बरसने ही लगते हैं जाने-अनजाने।

हमदर्द कौन है,जो बहते अश्क़ पी ले?
चले आते हैं दिल को यूँ ही बहलाने।

दरिया-ए-अश्क़ में बह गयीं हसरतें,
ख़्वाबों के सहरा में भटकते हैं दीवाने।

कहीं जब भी खुशियों के पैगाम मिले तो,
रंगते-अक़्स बदल देते अश्क़ मस्ताने।

चाहत के डगर पे मिल जाये गर मंजिल,
अँखियों के कोर से मिल जाते नजराने।

बिटिया बाबुल के द्वार से होती रुख़सत,
अश्क़ों-ख़्वाबों के लड़ियों से घर सजाने।

निवाला छीन जाये,भूखे पेट जो सोयें,
अनायास ही अश्क़ आते फिर से सताने।

जब रंजो-गम की हद पार होने लगते,
छलक-छलक जाते हैं अश्क़ के पैमाने।

दर्दे-अश्क़ का भी देखो अजीब-सा रिश्ता,
रिसता है आँख से दर्द जब लगे तड़पाने।

अहसास के झील में कंकड़ कोई मारे,
गमे-जाम अश्क़ पीते आँख के मयख़ाने।

बेगैरत जहां में आये इक वक्त ऐसा भी,
अश्क़े-लहू पिला जाते अपने-बेगाने।।

मैं मीरा तुम मेरे श्याम

तेरे दरस की हूँ दीवानी, मैं मीरा तुम मेरे श्याम।
मेरी अधरों पे तो साँवरिया, बस एक तेरा ही नाम।।

रुक्मिणी बन तेरी बनूँ अर्धांगिनी, ऐसी है कहाँ चाह?
मैं तो तेरे चरणों की दासी रहूँ बनी, तू दिखा राह।
बनना चाहूँ तेरी राधा, तुम ही बनो मेरे घनश्याम,
तेरे दरस की हूँ.............।
मेरी अधरों पर तो.......।।

पुकारती फिरती पिया-पिया, पत्ते-पत्ते पर तुम्हें निहारुँ,
विकल हो विचरती वन-वन, व्यथा हिय की मैं किससे गुहारूँ?
जोगनिया बन फिरूँ, मोहन को ढूँढ़ूँ दूजा नहीं है काम।
तेरे दरस की हूँ..............।
मेरी अधरों पर............।।

बाँसुरिया तेरी सदा पुकारती, नाम राधा ही राधा,
श्याम साँवरे तेरे बिन तो, मेरा जीवन भी है आधा।
शीत की सुहानी शीतल भोर में बन जाओ स्वर्णिम घाम,
तेरे दरस की हूँ............।
मेरी अधरों पर तो.......।।

तेरे दरस की दीवानी हूँ, मैं मीरा तुम मेरे श्याम,
मेरी अधरों पर तो साँवरिया बस एक तेरा ही नाम।।

सोचे सखा कौन मेरा?

चंदा मद्धम आभा घोले,
नभ पर मेघों का डेरा।
निशा पूनम की सकुचा रही,
सोचे सखा कौन मेरा?

भीगी-भीगी रुत बरखा की,
धरा जरा खोयी-खोयी।
अलसाया-सा लगता दरिया,
कश्ती है सोयी-सोयी।।

पेड़ के झुरमुट फैली दीप्ति,
मौन क्यों समीर हुआ है?
चाँदनी क्यों शरमा रही है?
सोच मन अधीर हुआ है।।

दिल का क्या कसूर

करते हैं गुजारिश कर लो मेरा प्यार मंजूर।
दिल से चाहते हैं हम तुम्हें ऐ, मेरे हुजूर।
दिल... का... क्या... है... कसूर...।

क्या मेरा प्यार तुम्हें रास ना आया? बता दो न!,
इक बार मेरे पास आओ ना रहो दूर-दूर।
दिल... का... क्या... है... कसूर...।

आहें भरता है ये दिल बस तेरे ही नाम का,
दिल के आगे हर इंसां हो जाता है मजबूर।
दिल... का... क्या... है... कसूर...।

दिल को मेरे मैने कर दिया तेरे ही नाम,
नादां-सा दिल था तूने तो कर दिया चूर-चूर।
दिल... का... क्या... है... कसूर...।

तेरी चाहत में दिल खोया-खोया-सा रहता है,
बिठाया तुझे ही दिल के घरौंदे में ऐ, मगरूर।
दिल... का... क्या... है... कसूर...।

करते हैं गुजारिश कर लो मेरा प्यार मंजूर,
दिल से चाहते हैं हम तुम्हें, ऐ मेरे हुजूर।
दिल... का... क्या... है...कसूर...।

मैं मजदूर हूँ

मेहनत ही मेरा जीवन है, कर्म से कहाँ दूर हूँ?
मैं मजदूर हूँ... मैं मजदूर हूँ... हाँ मैं मजदूर हूँ।।

तिनका-तिनका है जोड़ा मैंने, रेशा-रेशा बुना,
अपने इन हाथों से ही तो एक-एक मोती चुना।
नायाब सी कलाकारी पेश करता मैं हुजूर हूँ,
मैं मजदूर हूँ... मैं मजदूर हूँ... हाँ मैं मजदूर हूँ।।

मेरे पसीने के बूदों से ही धरती बनती सोना,
पीर छुपा मुस्कान लिए जग को बनाया सलोना।
खुशी को मोहताज हूँ मगर नहीं मैं मजबूर हूँ,
मैं मजदूर हूँ... मैं मजदूर हूँ... हाँ मैं मजदूर हूँ।।

पत्थर तराश गढ़ता मैं मंदिर-मस्जिद-गुरूद्वारा,
महल-इमारतें खड़ा करके भी रह जाता मैं बेचारा।
अपने हुनर व जज्बे का करता कहाँ मैं गुरूर हूँ?
मैं मजदूर हूँ... मैं मजदूर हूँ... हाँ मैं मजदूर हूँ।।

परिश्रम का मैं मिसाल हूँ, विकास का हूँ आधार,
हाय! भाग्य मेरा, इसपे भी मेरा नहीं कोई अधिकार।
पेट की पालने खातिर खुशियाँ बेचता जरूर हूँ,
मैं मजदूर हूँ... मैं मजदूर हूँ... हाँ मैं मजदूर हूँ।।

मेहनत ही मेरा जीवन है, कर्म से कहाँ दूर हूँ?
मैं मजदूर हूँ... मैं मजदूर हूँ... हाँ मैं मजदूर हूँ।।

तुम्हारे लिए

ये दिल
आज भी बेकरार रहता है
तुम्हारे लिए, हाँ माँ
तुम्हारी हर एक बात
आज भी जेहन में बसी है
तुम्हारे दिए संस्कार
तुम्हारी वो मृदुल मुस्कान
तुम्हारी स्नेह भरी वात्सल्य पूर्ण
नयनों में मानो सारे संसार के लिए
अमृत रस समाया था
तुम्हारी ममता मयी आँचल में
जिसमें सुखद शीतल छाया का
अनुभव किया है मैंने,
आज तुम इस
दुनिया में नहीं हो
पर, उस देवलोक से
मानो आशीष वर्षा
नित निरंतर कर रही हो।

मीत बिन सब सून

मीत बिन सब सून इस संसार में,
क्या मजा आये फिर इस बहार में।

ढूँढती तुमको इस जमीं पे कहाँ?
तुम बसे हो चमन-ए-गुलजार में।

रात कटती ही नहीं अब आ सजन,
सितम ढाते हो इस कदर प्यार में।

छोड़ दे नाराजगी भी मिल जरा
देख आके क्या मजा इकरार में।

प्रीत हो तुम ही इसे अब समझ लो
जन्नत नजर आ रहा सरकार में।

प्रेम अंतर्मन की मधुर आवाज है

प्रेम तो अन्तर्मन की मधुर आवाज है।
प्रेम हृदय वीणा का सुरीला साज है।।

बहती रहती दिल में मस्त प्रेम दरिया,
अठखेली कर तरंगे कहें पिया पिया।
मतवाले दिवानों के सिर का ताज है,
प्रेम तो अन्तर्मन ....।
प्रेम हृदय वीणा............।।

बहके कजरा, महके गजरा रातों में,
खोयी तेरी मीठी-मीठी बातों में।
दुनिया से तुम जुदा, हमें तुम पर नाज है,
प्रेम तो अन्तर्मन...........।
प्रेम हृदय वीणा.............।।

बावरा सा हुआ मन प्रेम की लगन में,
तन -मन जलता जाये प्रीत की अगन में।
बिखर के गीत बने, जो हसीन राज है,
प्रेम तो अन्तर्मन...........।
प्रेम हृदय वीणा..........।।

बहका-बहका पग, चहका-चहका चितवन,
नये-नये नजारे, जीवन बना चंदन।
सपनों के आसमान, हसीं परवाज है।
प्रेम तो अन्तर्मन..........।
प्रेम हृदय वीणा..........।।

कैसा हाल है मेरा?

आजकल हुआ कैसा हाल है मेरा?
बहका-बहका देखो चाल है मेरा।

गुम हूँ कहाँ नहीं? मुझे बता दो जरा,
उलझा-उलझा सही सवाल है मेरा।

मैंने लिखा है गजल तेरे नाम का,
इक-इक अशआर पर धमाल है मेरा।

नजदीक आकर कभी बैठो तो सही,
सुनो भी तो कभी, क्या ख्याल है मेरा।

तुम जिसे हाथ में लिए इतराते हो,
हाँ, वही गुलाबी रुमाल है मेरा।

तेरी ही यादें, तेरी रही बातें,
गुजरा यूँ ही पूरा साल है मेरा।

'धरा' जमाना यूँ ही नहीं जलता सुन,
जहां में प्यार बना मिसाल है मेरा।

तराना

खूबसूरत इक फसाना चाहिए,
गुनगुनाने को तराना चाहिए।

चन्द पल की जिंदगी जी ले जरा,
हर घड़ी बस मुस्कुराना चाहिए।

फिक्र करता कौन कब किसकी यहाँ?
रंज-गम सारे भुलाना चाहिए।

इश्क जब भी हो किसी से बोल दो,
यूँ नहीं दिल को सताना चाहिए।

मौन मेरे लब्ज अब लो बिखरते,
दास्तां कहने बहाना चाहिए ।

ख्वाहिशे-जन्नत अगर हो पालते,
उम्र उल्फत में बिताना चाहिए।

दोस्त सच्चा वो कहाँ जो दे दगा?
दोस्ती दिल से निभाना चाहिए।

कब तलक हम बेकसी में ही रहें
ख़ूब ही दिलकश़ जमाना चाहिए

दर्द मीठी-सी चुभन देता 'धरा',
जख्म फिर कोई पुराना चाहिए।

पलकों में सपने सँजोए

पलकों में सपने सँजोए, आस मन पलती रही।
चाह मिलन की उर समाये, रात दिन जलती रही।

तुम मिलोगे कभी कहीं तो, खोजते नैन मेरे,
हो रहा आकुल मेरा मन, है कहाँ चैन मेरे।
झंझा की परवाह कब थी, वक्त बन चलती रही,
पलकों में सपने........।

जिंदगी की धूप छाँह में, रहा मेरा बसेरा,
पाँव जब जब डगमगाए, मिले आसरा तेरा।
उम्मीद का दीप जला कर, साँझ बन ढलती रही,
पलकों में सपने.........।

मेरी साँसे चल रहीं हैं, नाम से तेरे पिया,
अधरों पे सरगम थमी थी, नाम तव रटता जिया।
प्रीत के उपवन में हरदम, सुमन-सा खिलती रही,
पलकों में सपने ....।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम -	**धनेश्वरी देवांगन 'धरा'**
जन्म -	११/३ जगदलपुर (छत्तीसगढ़)
पति -	श्री राकेश देवांगन
शिक्षा -	बी.एस.सी., एम.ए.(हिन्दी साहित्य), एल.एल.बी., बीएड.
पता -	नरसिंह मंदिर गली, कोष्टा पारा रायगढ़ फोन नं ८३४६४३०६६०
कार्य -	शास. शिक्षिका
प्रकाशन -	प्रजातंत्र का स्तंभ प्रकाशन,
सम्मान -	१. प्रजातंत्र का स्तम्भ गौरव सम्मान २. डॉ सतीश स्मृति साहित्य सम्मान ३. श्रमजीवी महिला आयोग समिति नारी गौरव अवार्ड ४. नयी पीढ़ी की आवाज सम्मान ५. राष्ट्रीय कवि संगम, प्रान्तीय संगठन (रायपुर द्वारा) सहभगिता सम्मान ६. अटल श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान ७. अटल भूषण सम्मान

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-054-4
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध